इन बिध सोर हुआ साथ में, ठौर ठौर पड़ी पुकार।
एक आए एक आवत हैं, एक होत हैं तैयार।। १२ ।।

इस तरह से सुन्दरसाथ में कुर्बानी की लहर दौड़ गई। कोई चरणों में आ गए, कोई आ रहे हैं और कोई आने की तैयारी में हैं।

ऐसा समया इत हुआ, आए पोहोंचे इन मजल।
कोई कोई लाभ जो लेवहीं, जिन जाग देखाया चल।। १३ ।।

उस समय सुन्दरसाथ के अन्दर ऐसा हो गया कि जैसे हम अपनी मंजिल तक पहुंच गए हैं। उनमें से जो जागकर (धनी की पहचान कर) चले, उन्होंने कुर्बानी का लाभ लिया।

सुध बुध आई साथ में, सुरता फिरी सबन।
कोई आगे पीछे अव्वल, सबे हुए चेतन।। १४ ।।

सब सुन्दरसाथ के बीच में जागृति आई। माया से मन हटाकर कोई आगे, कोई पीछे आए। कोई शुरू में आए। इसी तरह सब सावचेत हो गए।

कोई कोई पीछे रेहे गई, तिनकी सुरत रही हम मांहें।
ढील करी ज्यों स्वांतसियों, आए अंग पोहोंचे नाहें।। १५ ।।

कोई-कोई सुन्दरसाथ माया में रह गया पर उनकी सुरता तो सदा हमारे साथ रही। उनके तन सेवा का लाभ नहीं ले सके और उन्होंने सांसारिक कष्ट उठाए। वैसे ही जैसे स्वांतसी सखियों को देरी करने के कारण माया के कष्ट सहने पड़े।

कहे महामत परीछा तिनकी, जो पेहेलें हुए निरमल।
छूटे विकार सब अंग के, आए पोहोंचे इस्क अव्वल।। १६ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि जिन्होंने जागृत बुद्धि की वाणी से अपने विकार निकालकर अपने को निर्मल कर लिया और सबसे पहले धनी का इश्क लेकर चरणों में आए, यही मोमिनों की परीक्षा है।

॥ प्रकरण ॥ ९२ ॥ चौपाई ॥ १३२० ॥

राग श्री

अब हम चले धाम को, साथ अपना ले।
लिख्या कौल फुरमान में, आए पोहोंच्या ए।। १ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि कुरान में लिखे कौल के अनुसार (बारहवीं सदी में फजर का) समय आ गया है। अब हम सुन्दरसाथ को लेकर धाम के चितवन में मग्न हो रहे हैं।

सखी हम तो हमारे घर चले, तुम हूजो हुसियार।
सुरता आगे चल गई, हम पीठ दई संसार।। २ ।।

हे सखी! हम तो अपने घर परमधाम में मग्न हो रहे हैं। तुम सावचेत हो जाना। हमने संसार को पीठ करके अपनी सुरता को परमधाम में लगा लिया है।

हममें पीछे कोई ना रहे, और रहो सो रहो।
गुन अवगुन सबके माफ किए, जिन जो भावे सो कहो।। ३ ।।

अब हमारे सुन्दरसाथ में कोई पीछे नहीं रहना चाहिए। कोई रहे तो रहे। हमने तो सबके गुण और अवगुण को भुला दिया है। अब जिन्हें जैसा कहना है, कहते रहो।

Nijanand App

अब हम रह्यो न जावहीं, मूल मिलावे बिन।
हिरदे चढ़ चढ़ आवहीं, संसार लगत अगिन।। ४ ।।

अब हमसे मूल-मिलावे के बिना नहीं रहा जाता। मूल-मिलावे का ध्यान आता है तो संसार आग के समान लगता है।

सोई बस्तर सोई भूखन, सोई सेज्या सिनगार।
सोई मेवा मिठाइयां, अलेखें अपार।। ५ ।।

अब ऐसा लगता है कि हम परमधाम के वस्त्र, आभूषण, सेज्या, सिनगार, मेवा, मिठाइयों आदि के बेशुमार अखण्ड सुखों को ले रहे हैं।

सोई धनी सोई वतन, सोई मेरो सुंदरसाथ।
सोई विलास अब देखिए, दोरी खैंची उनके हाथ।। ६ ।।

अपने धनी, वतन तथा सुन्दरसाथ के आनन्द दिखाई दे रहे हैं। मेरी आत्मा श्री राजजी के चरणों में है। वह मेरी सुरता को खींचकर धाम में ले जा रहे हैं।

सोई चौक गलियां मंदिर, सोई थंभ दिवालें द्वार।
सोई कमाड़ सोई सीढ़ियां, झलकारों झलकार।। ७ ।।

परमधाम के चौक, गलियां, मन्दिर, थंभ, दीवारें, दरवाजे, किवाड़ और सीढ़ियां सब झलकती हुई दिखाई दे रही हैं।

सोई मोहोल सोई मालिए, सोई छज्जे रोसन।
सोई मिलावे साथ के, सोई बोलें मीठे वचन।। ८ ।।

रंग महल की मंजिलें, नवीं भौम के छज्जे व सुन्दरसाथ के मिल बैठकर मीठे वचन बोलने के आनन्द मिलने लगे हैं।

सोई झरोखे धाम के, जित झांकत हम तुम।
सो क्यों ना देखो नजरों, बुलाइयां खसम।। ९ ।।

परमधाम के मन्दिरों के यह वही झरोखे हैं जहां से हम सुन्दरसाथ झांककर वनों की शोभा देखते थे। हे सुन्दरसाथजी! धनी बुला रहे हैं। तुम आंखें खोलकर क्यों नहीं देखते?

सोई खेलना सोई हंसना, सोई रस रंग के मिलाप।
जो होवे इन साथ का, सो याद करो अपना आप।। १० ।।

परमधाम का खेलना, हंसना व आनन्द से मिलना, जो सुन्दरसाथ परमधाम के हैं वह याद करके अपने चितवन से देखो।

सोई चाल गत अपनी, जो करते माहें धाम।
हंसना खेलना बोलना, संग स्यामाजी स्याम।। ११ ।।

परमधाम में अपनी चाल, गति, हंसने, बोलने, खेलने की जो लीला श्री राजजी श्री श्यामाजी के साथ करते थे, उसे चितवन कर याद करो।

सोई बातें प्रेम की, सोई सुख सनेह।
सुख अखंड को भूल के, क्यों रहे झूठी देह।। १२ ।।

परमधाम की प्रेम की बातें तथा अखण्ड सुख और स्नेह को भूलकर झूठे तन की माया में क्यों लगे हो?

Nijanand App

सोई सेज्या सोई मन्दिर, सोई पिउ जी को विलास।
सोई मुख के मरकलड़े, छूटी अंग की आस।। १३ ।।

परमधाम की सेज्या, मन्दिर, धनी का विलास और मुख की मुस्कान देखकर इस झूठे तन की चाहना मिट गई।

सोई रसीले रंग भरे, निरखें नेत्र चढ़ाए।
सुन्दर मुख सनकूल की, भर भर अमृत पिलाए।। १४ ।।

श्री राजजी महाराज के इश्क के भरे नेत्र, जिनसे वह बांकी चितवन से देखते थे और उनका सुन्दर मुखारबिन्द जिससे वह अमृत भर-भर पिलाते थे।

सोई कटाछे स्याम की, सींचत सुरत चलाए।
बंके नैन मरोर के, दृष्टें दृष्ट मिलाए।। १५ ।।

श्री राजजी महाराज तिरछी निगाहों से इश्क पिलाकर हमारी सुरता को प्रेम से सींचते हैं और बांके नैनों की नजर से हमारी नजर मिलाते हैं।

कहा कहूं सुख साथ को, देखें भृकुटी भौंह चढ़ाए।
सुखकारी सीतल सदा, सुख कहा केहेसी जुबांए।। १६ ।।

जब श्री राजजी महाराज अपनी भौहें चढ़ाकर देखते हैं तब सुन्दरसाथ को जो शीतल सुख होता है उसका वर्णन इस जबान से नहीं हो सकता।

सुच्छम सरूप ने सुंदरता, उनमद सारे अंग।
बराबर एकै भांत के, और कई विध के रस रंग।। १७ ।।

श्री राजजी महाराज का स्वरूप सुन्दर और सूक्ष्म है तथा सारे अंग मस्ती से भरे हैं। विविध प्रकार के आनन्द रस-रंग से भरपूर हैं।

एक दूजे के चित्त पर, चाल चले माहोंमाहें।
पात्र प्रेम प्रीत के, हांस विनोद बिना कछू नाहें।। १८ ।।

परमधाम की सखियां परस्पर एक-दूसरे की चित्त की चाहना के अनुसार चाल चलती हैं। इनके तन प्रेम के स्वरूप हैं जिनमें हंसी और विनोद के बिना कुछ नहीं है।

बोए नेक आवे इन घर की, तो अंग निकसे आहे।
सो तबहीं ततखिन में, पिउ जी पे पोहोंचाए।। १९ ।।

ऐसे परमधाम की जरा सी भी सुगंधि मिल जाए तो इस संसार का तन एक ही आह में छूट जाए और सुरता तुरन्त ही धनी के चरणों में पहुंच जाए।

याद करो जो मांगिया, धनिएं खेल देखाया कर हेत।
महामत कहें मेहेबूब के, सुख में हो सावचेत।। २० ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि उस खेल को याद करो जो तुमने मांगा था और जिसे धनी ने प्यार करके दिखलाया है। अब खेल देखकर धनी के अखण्ड सुख में सावचेत होकर सुख लो।

।। प्रकरण ।। ९३ ।। चौपाई ।। १३४० ।।

Nijanand App